

डॉ. डेविड डिसिल्वा , नए नियम की सांस्कृतिक दुनिया, सत्र 7, पवित्रता और प्रदूषण

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड डिसिल्वा हैं जो न्यू टेस्टामेंट की सांस्कृतिक दुनिया पर अपना शिक्षण दे रहे हैं। यह सत्र 7 है, पवित्रता और प्रदूषण।

आप अपने चर्च में बाइबल अध्ययन समाप्त कर रहे हैं, और आप बाइबल की किसी पुस्तक जैसे जॉन या रोमन के अंत तक पहुँच चुके हैं, और आप कक्षा से पूछते हैं, तो हमें आगे क्या अध्ययन करना चाहिए? और पीछे से कोई कहता है, अरे, लेवितस के बारे में क्या? और कक्षा में सभी लोग हँसने लगते हैं क्योंकि वे सभी जानते हैं कि यह एक मज़ाक है।

कई ईसाई, निश्चित रूप से पश्चिमी चर्चों में, लेवितस को एक ऐसी पुस्तक मानते हैं जो इतनी सुलभ या अर्थपूर्ण नहीं है। हमें लेवितस जैसे पाठ के सहानुभूतिपूर्ण पाठक बनने के लिए पश्चिम में वास्तव में कड़ी मेहनत करनी होगी, जहाँ हम इसकी सभी बातों को शुद्ध और अशुद्ध, प्रदूषित और अपवित्र के रूप में न देखें, जैसे कि क्या बड़ी बात है? और हमें उस बिंदु तक पहुँचने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी जहाँ हम समझ सकें कि पवित्र ईश्वर से कैसे संबंध बनाए रखें, इस संबंध में ये चिंताएँ वास्तव में लोगों के लिए कितनी सार्थक थीं। 21वीं सदी के ईसाइयों के रूप में हम इस संबंध में बहुत सी बाधाओं का सामना करते हैं, विशेष रूप से पश्चिमी दुनिया में और उससे भी अधिक विशेष रूप से उस दुनिया के प्रोटेस्टेंट क्षेत्रों में।

हमें शुरू से ही सिखाया गया है कि पुराने नियम के पवित्रता संहिता और अनुष्ठान कानूनों को पुराना, बाहरी, कानूनी माना जाए, जो सच्चे धर्म के रास्ते में बाधा डालते हैं, जो प्राचीन इस्राएली, प्रारंभिक यहूदी धार्मिक अभ्यास में शामिल लोगों के लिए सच्चे धर्म को प्रकट करने के विपरीत है। और प्रोटेस्टेंट ईसाइयों ने विशेष रूप से पवित्रता को रहस्य से मुक्त कर दिया है और पवित्र तक पहुँच को विनियमित किया है। अब, यह निश्चित रूप से सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं है।

हममें से बहुतों को निस्संदेह पवित्र ईश्वर की उपस्थिति में खुद को खोजने का अनुभव हुआ है, लेकिन मैं सुझाव दूंगा कि हमारे लिए उस तरह का अनुभव होना असामान्य हो सकता है जैसा कि यशायाह को अपनी पुस्तक के छठे अध्याय में हुआ था, जहाँ वह एक पवित्र स्थान पर था, अचानक उसे ईश्वर की उपस्थिति का एहसास हुआ, और अचानक उसे एहसास हुआ कि वह अशुद्ध और प्रदूषित लोगों के बीच कितना अशुद्ध और प्रदूषित था, इस तरह कि उसे इस बात का एहसास हुआ कि वह किसी भी क्षण वाष्पीकृत हो सकता है और वहाँ सुरक्षित रूप से रहने में सक्षम होने के लिए उसे शुद्धिकरण की आवश्यकता है। मुझे लगता है कि हमने पवित्रता की शक्ति और खतरे की भावना को काफी हद तक खो दिया है, जिसके कारण पहले बहुत से लोग पवित्रता के पास जाने को धार्मिक पेशेवरों, जिन्हें आमतौर पर पुजारी के रूप में जाना जाता है, तक सीमित कर देते थे।

अब, सभी विश्वासियों के लिए ईश्वर तक मुफ्त और सीधी पहुँच के साथ, पेशेवर मध्यस्थता की आवश्यकता के बिना, विशेष रूप से मसीह के अद्भुत कार्य के परिणामस्वरूप, और उन चीजों में से एक जो ईसाई धर्म के लिए सुधार विरासत के हिस्से के रूप में पुनर्प्राप्त की गई, मैं कहूँगा कि सुधार की गवाही के परिणामस्वरूप ईसाई धर्म की सभी शाखाओं के लिए पुनर्प्राप्त की गई, हमारे लिए मसीह के उस कार्य की पूरी सराहना करना मुश्किल है यदि हम पहले उन पुरानी व्यवस्थाओं को नहीं समझते हैं जिन्हें उन्होंने पार किया और उन व्यवस्थाओं को सार्थक बनाने वाले तर्क को नहीं समझते हैं। तो, आधुनिक पश्चिमी लोग, विशेष रूप से, प्राचीन इस्राएलियों, दूसरे मंदिर के यहूदियों और उनके जैसे लोगों के लिए शुद्धता और प्रदूषण की आंतरिक शक्ति को कैसे समझना शुरू कर सकते हैं? एक तरीका बस गंदगी और जिस तरह से हम गंदगी को संभालते हैं, उसके बारे में सोचना है। और गंदगी से मेरा मतलब केवल मिट्टी है।

उदाहरण के लिए, एक कप गमले की मिट्टी लें और उसे बगीचे में डाल दें। कोई भी व्यक्ति जो वहाँ से गुज़र रहा हो, वहाँ मिट्टी देखकर कहेगा, ठीक है, यह मिट्टी है। यह वहीं है जहाँ इसका स्थान होना चाहिए।

यह अन्य गंदगी के साथ है। यह महान आउटडोर में है। यह पूरी तरह से सामान्य है।

ड्राइववे पर मिट्टी का वह प्याला फैला दो। अगर तुम मेरी तरह हो, तो यह तुम्हें ज़्यादा परेशान नहीं करेगा। तुम समझ जाओगे कि तेज़ हवा, अच्छी बारिश, यह अपने आप ठीक हो जाएगा।

लेकिन कुछ लोग इसे ड्राइववे की गंदगी मानेंगे। वे शायद 24 घंटे के भीतर झाड़ लेकर वहाँ पहुँच जाएँगे और उसे वापस वहीं रख देंगे जहाँ उसका होना चाहिए, यानी बची हुई गंदगी के साथ घास पर फैला देंगे। उस मिट्टी के प्याले को लें और उसे लिविंग रूम के कालीन पर रख दें।

लगभग कोई भी इसे वहाँ रहने की अनुमति नहीं देगा। मैं लगभग कोई भी नहीं कहता क्योंकि वे शायद हमारे कॉलेज के लड़के हैं जो इसे देख रहे हैं। लेकिन आम तौर पर, आप इसे वहाँ रहने की अनुमति नहीं देंगे।

आप बहुत जल्दी से इसे उठा लेंगे और फिर बचे हुए हिस्से को तब तक वैक्यूम करेंगे जब तक कि उस जगह पर कोई गंदगी न रह जाए क्योंकि गंदगी लिविंग रूम के कालीन पर नहीं होनी चाहिए। मैं वास्तव में पिता बनने की कुछ यादों को ताज़ा कर रहा हूँ और ये शब्द कह रहा हूँ। गंदगी लिविंग रूम के कालीन पर नहीं होनी चाहिए।

भोजन के बारे में भी सोचें, हम क्या खाते हैं, क्या नहीं खाते हैं, हम कहाँ खाते हैं, और हम भोजन को कहाँ या कैसे संभालते हैं, खासकर भोजन के आस-पास। हम यह महसूस करना शुरू कर सकते हैं कि हमारे पास अपनी व्यक्तिगत शुद्धता और प्रदूषण संहिताएँ हैं जो काफी मजबूती से काम करती हैं। मैं गोमांस खाऊँगा, मैं सूअर का मांस खाऊँगा, मैं चिकन खाऊँगा।

मैं कुत्ते को नहीं खाऊँगा। ऐसा क्यों है? मैं वास्तव में यह नहीं कह सकता कि क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि कुत्ते का स्वाद बहुत बुरा होता है। ऐसा सिर्फ इसलिए है क्योंकि आप कुत्ते नहीं खाते।

आप जानते हैं, अमेरिका में, मुझे उम्मीद है कि मैं इसे देखने वाले किसी भी दर्शक को नाराज़ नहीं कर रहा हूँ। अमेरिका में, उदाहरण के लिए, कुत्तों या बिल्लियों को खाना वर्जित माना जाता है। यह हमारे आहार संबंधी अभ्यास का हिस्सा नहीं है।

और हम इसे इस तरह से लेंगे, अगर अचानक कोई हमारे सामने प्लेट रख दे और कहे, ओह, यह करी डॉग है, तो हम शायद इस विचार से घृणा करेंगे। सोचिए कि जब खाना प्लेट से गिरता है तो उसका क्या होता है। अगर खाना प्लेट से किचन काउंटर पर गिरता है, तो हममें से कई लोग कहेंगे, ओह, ठीक है, कोई बात नहीं।

बस इसे उठा लें, और यह ठीक है। अगर खाना प्लेट से फर्श पर गिर जाता है, तो हममें से कई लोग इसे फेंक कर फिर से शुरू करने या कम से कम इसे धोने के लिए प्रेरित हो सकते हैं। ईमानदारी से कहूँ तो, मितव्ययी होने के नाते, यही मेरा समाधान होगा।

बस इसे धोकर खा लो। यह ठीक रहेगा। कुछ लोगों को इसकी बिल्कुल भी परवाह नहीं होगी।

बस इसे वापस प्लेट में डाल दें, पाँच सेकंड का नियम, आप जानते हैं कि यह कैसे होता है, और दृढ़ रहें। हम भोजन के साथ जिस तरह से पेश आते हैं, वह हमारे सामाजिक शुद्धता और प्रदूषण कोड की तरह कुछ दर्शाता है। हम अपना खाना उठाकर लिविंग रूम के कालीन पर नहीं फेंक देते, और कालीन से ही खाना नहीं खाते।

क्यों नहीं? ऐसा करने में वास्तव में कुछ भी गलत नहीं है। लेकिन यह हमें किसी तरह से गलत लगता है। यह नैतिकता या नैतिक या जो कुछ भी है उससे कहीं ज़्यादा शुद्धता प्रदूषण की बात है।

अब, चलिए थोड़ा और व्यक्तिगत हो जाते हैं। सोचें कि आप बीमार लोगों के साथ कैसे पेश आ सकते हैं। हाँ, और यह बहुत व्यक्तिगत हो रहा है क्योंकि यहाँ प्रतिक्रियाओं का एक बहुत व्यापक स्पेक्ट्रम है।

हममें से कुछ लोग रोगाणुओं से डरे हुए हैं। ईमानदारी से कहें तो हममें से कुछ लोग रोगाणुओं से डरे हुए हैं।

और यह विशेष रूप से रोगाणुओं से डरने वाले लोग हैं जो मेरी बात से सहमत हो सकते हैं। आप देखते हैं कि किसी को सर्दी है, और वे छींक रहे हैं। वे ऐसा कर सकते हैं, और फिर वे आपसे हाथ मिलाना चाहते हैं। आप क्या करते हैं? क्या आप कहते हैं, आपसे मिलकर खुशी हुई, मुट्ठी बाँधते हैं, या दूसरे हाथ से कुछ और कहते हैं? क्या आप हाथ मिलाते हैं और फिर, जल्द से जल्द, अपने सैनिटाइज़र के लिए हाथ बढ़ाते हैं या अपना हाथ धोते हैं? या क्या आप बस हाथ मिलाते हैं और कहते हैं, हाँ, यह ठीक है?

मुझे भी नाक से बलगम निकलता है। यह कोई मुद्दा नहीं है। ये हमारे लिए पवित्रता और अशुद्धता के हमारे अपने नियमों को सामने लाते हैं और अगर हमें लगता है कि अशुद्धता हुई है तो अशुद्धता से कैसे निपटना है।

अब, मैंने अभी जो चर्चा की है, उसमें से बहुत कुछ सूक्ष्मजीवों, कीटाणुओं और इसी तरह की चीजों के प्रति हमारी चिंता के संदर्भ में समझाया जा सकता है। लेकिन जिस गतिशीलता के बारे में मैं बात कर रहा हूँ और जिस आंतरिक प्रतिक्रियाओं के बारे में मैं बात कर रहा हूँ और यह तथ्य कि हमने अपने लिए, किसी भी संस्कृति में समान रूप से नहीं, बल्कि अपने लिए, जो हम अशुद्धता समझते हैं, उससे निपटने के तरीके विकसित किए हैं, प्राचीन इस्राएलियों, द्वितीय मंदिर काल के यहूदियों, की आंतरिक भावनाओं को दर्शाते हैं, जो लैव्यव्यवस्था में वर्णित चीजों के संबंध में थीं। वैसे, हमारे अपने पवित्रता संहिताओं के भी व्यापक सामाजिक परिणाम हैं, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन इस्राएलियों या द्वितीय मंदिर के यहूदियों की पवित्रता संहिताओं के सामाजिक परिणाम थे।

वास्तव में, यह तर्क दिया जा सकता है कि वे शुद्धता संहिताएँ, वे प्रदूषण निषेध, मुख्य रूप से सामाजिक इंजीनियरिंग के उद्देश्य से थे, ताकि यहूदियों को यहूदियों से नज़दीकी तरीके से जोड़ा जा सके, लेकिन गैर-यहूदियों से नहीं, ताकि यहूदी पहचान, यहूदी जातीय सीमाएँ, समूह की सीमाएँ बरकरार रहें। अपने शुद्धता और प्रदूषण संहिताओं के बारे में सोचें और कैसे उनके सामाजिक परिणाम भी हो सकते हैं। क्या आप किसी के घर दूसरी बार रात के खाने के लिए जाते हैं, यह देखने के बाद कि उनके भोजन को संभालने में, माफ़ करें, यह देखने के बाद कि उनके भोजन को संभालने में आपकी तुलना में कम सावधानी बरती जाती है? शायद आप ऐसा करते हैं, शायद नहीं।

शायद आप कहें, मैं नहीं जा रहा हूँ; मैं उन्हें रात के खाने के लिए बुलाऊँगा। मुझे वे पसंद हैं, लेकिन मैं वहाँ वापस जाने में सहज नहीं हूँ। या अपने शहर या कस्बे के बीच में बेघर लोगों के बारे में सोचें। शायद आप बेघर व्यक्ति को संगति का दाहिना हाथ देने में संकोच न करें, लेकिन शायद आपने देखा हो कि बहुत से लोग बेघर व्यक्ति को देखते ही ऐसा करते हैं।

बेघर व्यक्ति वह व्यक्ति होता है जो समाज में अपनी जगह से बाहर होता है, वह व्यक्ति जिसका समाज में कोई स्थान नहीं होता। हम सभी के पास जगह होती है, और यह शुद्धता और प्रदूषण के विचार के लिए आवश्यक है। हर चीज़ की एक जगह होती है, और हर चीज़ के लिए एक जगह होती है।

तो, एक बेघर व्यक्ति एक विस्थापित व्यक्ति है। और हम स्वच्छता के संदर्भ में सोच सकते हैं, आप जानते हैं, एक बेघर व्यक्ति के पास शॉवर और हाथ धोने और इस तरह की चीजों की सबसे अच्छी सुविधा नहीं हो सकती है, लेकिन अंततः, स्वच्छता के बारे में हमारे विचार उस व्यक्ति के साथ हमारे सामाजिक संबंधों को प्रभावित कर सकते हैं। यही बात समय पर भी लागू हो सकती है।

मैं व्यक्तिगत रूप से ऐसा महसूस नहीं करता, लेकिन बहुत से लोगों को लग सकता है कि अगर उन्हें घर पर कोई व्यावसायिक कॉल आती है, तो उनके समय का उल्लंघन होता है, और उनके समय और स्थान का उल्लंघन होता है। इसके विपरीत, अगर कोई व्यक्ति काम पर है, तो अब यह आप पर लागू नहीं होगा यदि आप पादरी हैं, लेकिन अगर आप एक अकाउंटेंट या कुछ और

हैं, अगर आप काम पर हैं और कोई व्यक्ति कोई बहुत ही निजी मामला उठाता है और उसके लिए घर पर होने वाली किसी बात के बारे में बात करना चाहता है, तो आपको लग सकता है कि कार्यस्थल का उल्लंघन हुआ है, काम के समय का उल्लंघन हुआ है। इसलिए, हम पवित्रता और प्रदूषण के प्राचीन नियमों के साथ कुछ सहानुभूति रखना शुरू कर सकते हैं यदि हम उन स्थितियों की किसी भी असुविधा के साथ प्रतिध्वनित हो सकते हैं जिनके बारे में मैं बात कर रहा हूँ या जो स्वच्छ है, जो प्रदूषित है, उसके प्रति किसी भी तरह की प्रतिक्रियाएँ जिनका मैं नाम ले रहा हूँ।

हमारे कई आधुनिक शुद्धता कोड, अगर उन्हें ऐसा कहा जा सकता है, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, सूक्ष्म जीवों और संक्रमण से संबंधित हैं। प्राचीन लोगों के साथ अंतर उस गतिशीलता में नहीं है जिसका मैं वर्णन कर रहा हूँ, बल्कि इस तथ्य में है कि वे बीमारी को पकड़ने के बारे में इतना चिंतित नहीं हैं, जो कम से कम पश्चिमी आधुनिक सोच को बहुत आगे ले जाता है, लेकिन कुछ ऐसा पकड़ने के बारे में जो उन्हें पवित्र लोगों के साथ बातचीत करने के लिए अयोग्य बना देगा, और इस तरह लोगों की उपस्थिति और पवित्र ईश्वर की सुरक्षा में रहने की अयोग्यता को भी बढ़ाएगा। इसके विपरीत, और मैंने ऐसा होते भी सुना है, प्राचीन यहूदी शुद्धता कोड को आधुनिक चिकित्सा शब्दों में समझाने की कोशिश वास्तव में इस बात को भूल जाती है कि शुरुआती यहूदियों को शुद्धता और प्रदूषण की परवाह क्यों थी।

आप जानते हैं, यहूदी आहार नियमों को समझाने, तर्कसंगत बनाने, उचित ठहराने के लिए आप सूअर के मांस के बारे में चिकित्सकीय रूप से जो कुछ भी कह सकते हैं, वह इस बात से अलग है कि सूअर का मांस अशुद्ध क्यों था, प्राचीन दुनिया में सूअर का मांस अशुद्ध क्यों था। और हम एक विदेशी व्याख्या थोप रहे हैं जो यहूदी के लिए किसी भी तरह से चिंता का विषय नहीं होगा, जो सूअर का मांस खाने के बजाय यातना के तहत मरना पसंद कर सकता है, जैसा कि आप जानते हैं, कानून का जानबूझकर उल्लंघन है। पवित्रता का संबंध ब्रह्मांड और उस ब्रह्मांड में मौजूद हर चीज के लिए ईश्वर द्वारा निर्धारित आदेश की अवधारणा से है।

जैसा कि मैंने कुछ क्षण पहले ही बताया था, इसे ब्रह्मांडीय पैमाने पर हर चीज़ के लिए एक स्थान और हर चीज़ के अपने स्थान पर होने की चिंता के रूप में वर्णित किया गया है। इसके विपरीत, प्रदूषण का संबंध उन सीमाओं को पार करने से है जिन्हें पार नहीं किया जाना चाहिए, जगह से बाहर जाना, किसी निश्चित स्थान या समय में वह करना जो अनुचित है, और ऐसी स्थिति में जाना जहाँ व्यवस्था किसी तरह से खराब हो जाती है। इस प्रकार, जब हम लैव्यव्यवस्था को पढ़ते हैं, तो हम देखते हैं कि तरल पदार्थों जैसी चीज़ों के बारे में बहुत चिंता है।

प्रजनन से संबंधित शारीरिक तरल पदार्थ किसी न किसी तरह से शरीर के अंदर ही होते हैं और जब वे बाहर निकलकर उस सीमा को पार कर जाते हैं तो प्रदूषित हो जाते हैं। परमेश्वर के निर्धारित विश्राम के दिन काम करना एक ऐसी गतिविधि है जो जगह से बाहर है, किसी स्थान को समय के एक तरह के नक्शे के रूप में सोचना। झींगे अशुद्ध होते हैं क्योंकि वे समुद्र में रहते हैं लेकिन ज़मीन के जानवरों की तरह चलते हैं और इसलिए उन श्रेणियों के मिश्रण का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें अलग रखा जाना चाहिए था।

मेरा मतलब है कि ब्रह्मांड और उसके क्रम के लिए इस दृष्टि के संदर्भ में, सब कुछ कहाँ है? हर चीज़ के लिए जगह कहाँ है? त्वचा के अलग होने, त्वचा के रिसाव की समस्या से पीड़ित लोग, जिन्हें अक्सर बाइबिल के अंग्रेजी अनुवादों में कुछ रोग के रूप में गिना जाता है, एक उचित सीमा, त्वचा की सीमा के क्षरण का अनुभव करते हैं, जहाँ व्यक्ति समाप्त होता है और बाकी दुनिया शुरू होती है, और इस तरह वे प्रदूषण की स्थिति में पहुँच जाते हैं। यह सब केवल एक अन्य कारक के कारण मायने रखता है: पवित्र की उपस्थिति।

इस्राएल में, यह विशेष रूप से एक पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति है। पवित्रता क्या है? पवित्रता वह है जो सामान्य से अलग है। यह परिपूर्ण, संपूर्ण, सम्पूर्ण है, और सामान्य जीवन के संबंध में शक्ति से भरा हुआ है।

यह शक्ति आशीर्वाद या विनाश के लिए प्रकट हो सकती है। और पवित्र, जिसने ब्रह्मांड को अपने संपूर्ण क्रम में स्थापित किया है, प्रदूषण को बर्दाश्त नहीं कर सकता। एक ओर, तो, इस्राएल को अपने बीच निवास करने वाले पवित्र से मिलने वाले लाभों की सख्त जरूरत है।

दूसरी ओर, इज़राइल को अपने प्रदूषण से पवित्रता का उल्लंघन न करने के लिए अत्यंत सावधान रहना होगा। इसलिए, इज़राइल को स्पष्ट दिशा-निर्देशों की आवश्यकता है, जैसे कि लेविटिकस प्रदान करता है, ताकि पता चल सके कि कब कोई चीज़ या व्यक्ति स्वच्छ होने से प्रदूषित होने की सीमा को पार कर गया है। इज़राइल को प्रदूषण को रोकने और खत्म करने के लिए स्पष्ट प्रक्रियाओं की भी आवश्यकता है।

इसलिए, शुद्धिकरण अनुष्ठान अशुद्धता के दायरे में पहुँची हुई चीज़ों को वापस शुद्धता के दायरे में लाने के तरीके हैं। और इज़राइल को यह जानना होगा कि पवित्र, विशेष रूप से पवित्र के संपर्क में प्रदूषण को आने से रोकने के लिए उचित सावधानी कैसे बरती जाए। यहाँ एक साइड नोट के रूप में, मैं बस यह बता सकता हूँ कि प्राचीन भूमध्यसागरीय दुनिया की सभी संस्कृतियाँ शुद्धता और प्रदूषण के बारे में चिंतित थीं और पवित्रता की स्थिति में पवित्रता के पास जाने के बारे में चिंतित थीं ताकि क्रोध के बजाय आशीर्वाद प्राप्त हो सके।

अब, ग्रीक और रोमन शुद्धता संहिताएँ शायद ही कभी इतनी जटिल और स्पष्ट थीं जितनी कि हम लेविटिकस में पाते हैं। लेकिन, उदाहरण के लिए, शिलालेख पाए गए हैं जो उन शर्तों को बताते हैं जिनके तहत कोई व्यक्ति किसी विशेष तीर्थस्थल या मंदिर या पवित्र स्थान पर जा सकता है। और इसलिए, यदि कोई व्यक्ति उस पवित्र स्थान पर उस दिव्य प्राणी से मिलने के लिए जाना चाहता है, तो उसे पहले कुछ प्रदूषणों से दूर रहना होगा, कुछ शुद्धिकरण से गुजरना होगा, और इसी तरह की अन्य चीज़ें करनी होंगी।

इसलिए, हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि शुद्धता और प्रदूषण ऐसी अवधारणाएँ और नियम हैं जो केवल यहूदियों या यहूदी ईसाइयों के लिए ही महत्वपूर्ण, प्रासंगिक और सार्थक हैं। यह बिलकुल भी सच नहीं है। असल में हम पाते हैं कि नए नियम में लेखक शुद्धता और प्रदूषण के बारे में मुख्य रूप से पुराने नियम और दूसरे मंदिर के यहूदी शुद्धता नियमों और रीति-रिवाजों और इसी तरह की बातों से प्रेरित होकर लिखते हैं।

क्योंकि, बेशक, शायद सभी, संभवतः अधिकांश, यदि सभी नहीं, तो न्यू टेस्टामेंट लेखकों की पृष्ठभूमि यही है। तो, आइए हम लैव्यव्यवस्था और उस पाठ में बताए गए शुद्धता और प्रदूषण के बारे में एक साथ सोचने में कुछ समय बिताएं। मैं लैव्यव्यवस्था 10 की कुछ आयतों से शुरुआत कर सकता हूँ।

जो उन प्रमुख श्रेणियों का परिचय देता है जिनके बारे में हमें बात करने की आवश्यकता होगी। प्रभु ने हारून से कहा, कि तुम पवित्र और सामान्य के बीच तथा अशुद्ध और शुद्ध के बीच अंतर करना। और तुम इस्राएल के लोगों को वे सभी विधियाँ सिखाना जो प्रभु ने मूसा के द्वारा उनसे कही हैं।

अब, इस छोटे से पाठ में, हम श्रेणियों के दो समूह पाते हैं जो युग्मित श्रेणियाँ हैं। पवित्र और सामान्य, श्रेणियों की एक संबंधित जोड़ी है। स्वच्छ और अशुद्ध, श्रेणियों की एक दूसरी संबंधित जोड़ी है।

इस बात पर भी ध्यान दें कि इस पाठ में पुजारी का प्राथमिक कार्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी लोग इन श्रेणियों के बारे में जानें और कैसे परमेश्वर ने निर्धारित किया है और निर्धारित किया है कि लोग इन श्रेणियों को कैसे संभालेंगे। इसलिए, वे सभी विधियाँ जो प्रभु ने मूसा के द्वारा लोगों को बताई हैं। आइए श्रेणियों की पहली जोड़ी के बारे में सोचें, पवित्र के विपरीत सामान्य।

सामान्य या अपवित्र, हालाँकि अंग्रेज़ी में अपवित्र शब्द का नकारात्मक अर्थ होता है, जैसे कि अपवित्रता, लेकिन सामान्य या धर्मनिरपेक्ष या अपवित्र शब्द आम तौर पर एक तटस्थ शब्द है। यह दुनिया के साधारण स्थानों और साधारण चीज़ों को संदर्भित करता है जो मनुष्यों के लिए सुलभ हैं। इसके विपरीत, पवित्र एक ऐसा शब्द है जो अर्थ से भरा हुआ है।

कॉमन एक तरह का अचिह्नित शब्द है। यह जोड़ी के लिए कोई बहुत खास शब्द नहीं है, लेकिन पवित्र जोड़ी का एक खास शब्द है। यानी, जोड़ी पवित्र को उजागर करने के लिए मौजूद है, न कि आम को उजागर करने के लिए।

पवित्र शब्द का तात्पर्य विशेष स्थानों या विशेष चीज़ों से है जिन्हें आम लोगों से अलग रखा गया है, साधारण लोगों से अलग, किसी विशेष तरीके से भगवान से संबंधित होने के नाते। शब्दों की दूसरी जोड़ी है स्वच्छ और अशुद्ध। स्वच्छ वास्तव में इस जोड़ी में तटस्थ शब्द है।

यह कोई खास शब्द नहीं है। और यह आम तौर पर किसी व्यक्ति या वस्तु को उसकी सामान्य अवस्था में संदर्भित करता है। इस सब के बारे में एक शानदार पाठ है रेजिंग अप ए फेथफुल प्रीस्ट, जो रिचर्ड नेल्सन द्वारा लिखी गई एक किताब है।

उस पुस्तक में, वे लिखते हैं कि जो स्वच्छ है, उसे वह माना जा सकता है जो सृष्टि में ईश्वर द्वारा स्थापित सीमाओं के भीतर अपने उचित स्थान पर है और जिसकी अपनी बाहरी सीमाएँ संपूर्ण और अक्षुण्ण हैं। इसके विपरीत, अशुद्ध एक अर्थपूर्ण शब्द है। यह किसी ऐसी चीज़ को दर्शाता है जो सामान्य अवस्था से प्रदूषण की खतरनाक अवस्था में पहुँच गई है।

अब, ये दोनों ही शब्द हमेशा काम करते हैं। आप इनमें से प्रत्येक जोड़े से किसी भी चीज़, किसी भी व्यक्ति का वर्णन एक श्रेणी के अनुसार कर सकते हैं। एक आम इज़राइली ज़्यादातर समय साफ़-सुथरा और आम होता है।

कभी-कभी, वह अशुद्ध हो जाता है और उसे अशुद्धता से निपटना पड़ता है या किसी तरह से उसका हिसाब रखना पड़ता है और उसका प्रबंधन करना पड़ता है। लेकिन ज़्यादातर समय, एक आम इस्राएली साफ़ और आम होता है। अगर वह या वह अशुद्धता का शिकार होता है, तो वह अशुद्ध और आम हो जाता है।

उदाहरण के लिए, एक महिला अपने मासिक धर्म के दौरान अशुद्ध हो जाती है और फिर भी सामान्य रहती है। लेकिन वह अवस्था प्रवाह के अंत में बनी नहीं रहती। वह शुद्धिकरण से गुजरती है और फिर से स्वच्छ और सामान्य हो जाती है।

यही बात उस व्यक्ति के साथ भी लागू होती है जिसे रात में वीर्यपात हो जाता है। यहूदी बाज़ार में बिकने वाला खाना, उम्मीद है, साफ़ और आम होगा। यह सही तरह का खाना होगा, सही तरीके से संभाला जाएगा, और यह आम होगा।

यह किसी भी आम इस्राएली के लिए खाने के लिए सुलभ होगा। गैर-यहूदी बाज़ार में बिकने वाले भोजन के साथ समस्या यह है कि यह, सभी संभावनाओं में, अशुद्ध और आम होगा और इसलिए एक यहूदी के लिए खाने के लिए अनुपयुक्त होगा। अशुद्ध होने के कारण, मंदिर में मूर्ति के लिए पशु बलि से आया है या ऐसे जानवर से आया है जिसे अनुचित तरीके से मारा गया है जिससे रक्त ऊतक में रह गया है और बाद में खाने के लिए वहीं रह गया है, और आपके पास क्या है।

दशमांश पुजारियों के लिए एकत्र किया जाता था, और इसका मतलब है भूमि की उपज का हिस्सा, इसलिए सारा गेहूँ नहीं, बल्कि थोड़ा गेहूँ। सारा जैतून का तेल या शराब नहीं, बल्कि थोड़ा जैतून का तेल और शराब। पुजारियों के लिए एकत्र किया गया दशमांश शुद्ध और पवित्र था।

इसलिए, उन्हें केवल पवित्र व्यक्तियों, याजकों द्वारा ही पवित्रता की स्थिति में खाया जाना था। आम इस्राएली के लिए दशमांश का कुछ हिस्सा खाना एक आम व्यक्ति के लिए पवित्र वस्तु को अपने पास रखने का अभियोग होगा, और यह इन श्रेणियों का उल्लंघन होगा। यह दशमांश और पवित्र पदार्थों को अपवित्र करेगा और ईश्वरीय क्रोध को भड़काएगा।

कब्रिस्तान अशुद्ध और आम था, जबकि मंदिर परिसर स्वच्छ और पवित्र था। ये सभी वर्गीकरण अशुद्ध को पवित्र की उपस्थिति में लाने से बचाने के लिए मौजूद थे। अशुद्ध और पवित्र के संयोजन के बारे में प्राचीन मानसिकता की तुलना की जा सकती है, और पश्चिमी सांस्कृतिक सादृश्य को माफ़ करें, पदार्थ और प्रतिपदार्थ के संपर्क में आने के संबंध में स्टारशिप एंटरप्राइज के चालक दल के दृष्टिकोण से।

आप हर कीमत पर इससे बचना चाहते थे क्योंकि इन दो चीज़ों के मिलने से विनाशकारी शक्ति विनाशकारी हो सकती थी। एक और बात जो हमें समझनी चाहिए। पहली सदी के आम यहूदी, टोरा से ही संकेत लेते हुए, अनुष्ठान कानून और नैतिक कानून के बीच कोई अंतर नहीं करते थे।

यह सब कानून था। यह सब समान रूप से कानून था और सभी समान रूप से सार्थक और बाध्यकारी थे। यह पवित्र परमेश्वर के सामने कैसे जीना है और उसके साथ वाचा कैसे निभानी है, इस बारे में एक सुसंगत निर्देश था।

यह लैव्यव्यवस्था में दोनों के सहज संयोजन में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, लैव्यव्यवस्था 19:18 से 19 तक के इस बहुत ही महत्वपूर्ण पाठ में। तुम अपने लोगों के बेटों और बेटियों के विरुद्ध बदला न लेना और न ही उनके विरुद्ध द्वेष रखना, बल्कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।

मैं यहोवा हूँ। तुम मेरी विधियों का पालन करोगे। तुम अपने पशुओं को किसी और जाति से प्रजनन न करने दोगे।

तुम अपने खेत में दो तरह के बीज मत बोना, न ही दो तरह की सामग्री से बने कपड़े का वस्त्र पहनना। आप यहाँ देख सकते हैं, इन दो आयतों में एक दूसरे के बगल में, जिसे हम आधुनिक लोग तुरंत नैतिक शिक्षा के रूप में मान सकते हैं। कोई द्वेष मत रखो।

बदला मत लो। अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो। यह लैव्यव्यवस्था की एक आयत है जिसे हम सभी जानते हैं।

और कुछ ऐसा जिसे हम अनुष्ठान कानून से संबंधित श्रेणी में रख सकते हैं। एक ही खेत में बोना नैतिक रूप से क्या मायने रखता है? मैं स्पष्ट रूप से किसान नहीं हूँ क्योंकि मैं अब संघर्ष कर रहा हूँ। जौ और गेहूँ या सोया और गेहूँ।

जाहिर है, आप जानते हैं, यह सुविधाजनक नहीं है जब तक कि आपको सोया और आपके सभी गेहूँ उत्पाद वास्तव में पसंद न हों। लेकिन यह हमारे लिए कोई नैतिक सवाल नहीं है। यह उन चीज़ों को न मिलाने की अनुष्ठानिक इच्छा से संबंधित होना चाहिए जो विवेकपूर्ण और अलग हैं।

तो, लेकिन प्राचीन इस्राएलियों के लिए, दूसरे मंदिर काल के यहूदियों के लिए, यह सब बस वही तरीका है जिस तरह से भगवान ने हमें जीने का निर्देश दिया है, एक सुसंगत संपूर्ण। इस गैर-भेदभाव को इस तथ्य से भी देखा जा सकता है कि उसी तरह की भेंट, जिसे हम अपराध-बलि के रूप में अनुवाद कर सकते हैं, एक व्यापारिक सौदे में धोखाधड़ी से उत्पन्न प्रदूषण और एक अशुद्ध व्यक्ति या जानवर के संपर्क के माध्यम से प्रदूषण से निपटने के लिए आवश्यक थी। तो फिर, हम कहेंगे, ओह, पहला एक नैतिक विचार है।

दूसरा एक अनुष्ठान संबंधी विचार है। पहली सदी के यहूदियों के लिए, दोनों ही केवल प्रदूषण संबंधी विचार थे और इस तरह एक साथ रखे गए थे। मैं आप सभी के साथ प्रारंभिक यहूदी धर्म के शुद्धता मानचित्रों के बारे में सोचने के लिए थोड़ा समय लेना चाहूँगा।

शुद्धता मानचित्र ब्रह्मांड के क्रम के मॉडल प्रदान करते हैं, यह दर्शाते हैं कि हर चीज़ का बाकी सभी चीज़ों के संबंध में अपने उचित स्थान पर होना कैसा दिखता है। वे एक मानदंड या बेंचमार्क

प्रदान करते हैं जिसके आधार पर कोई व्यक्ति यह समझ सकता है कि कब कोई चीज़ अपनी जगह से बाहर है और इसलिए उसे विशेष उपचार या ध्यान की आवश्यकता है, चाहे वह परिहार हो या शुद्धिकरण। और प्रारंभिक यहूदी धर्म के भीतर, हम लोगों के मानचित्रों, स्थानों के मानचित्रों, समय के मानचित्रों, खाद्य पदार्थों के मानचित्रों और व्यक्तिगत निकायों के मानचित्रों के बारे में बात कर सकते हैं।

और ये विभिन्न मानचित्र, जो हमें पहली नज़र में असंबद्ध लग सकते हैं, वास्तव में परस्पर सुदृढ़ीकरण करते हैं। वे विशेष रूप से यहूदी समुदाय की बाहरी सीमाओं को सुदृढ़ करने के लिए एक साथ काम करते हैं, यानी, जहाँ यहूदी रुकते हैं और गैर-यहूदी शुरू होते हैं, और आंतरिक संरचना और पदानुक्रम, यहूदी समुदाय के भीतर आंतरिक व्यवस्था। तो सबसे पहले, आइए लोगों के मानचित्रों के बारे में सोचें।

मानचित्रण का पहला स्तर इस्राएलियों को गैर-इस्राएलियों से अलग करेगा। गैर-यहूदी मूल रूप से मानचित्र से बाहर हैं। और इस्राएलियों को वास्तव में स्वच्छ माना जाता है।

गैर - इस्राएली वास्तव में अशुद्ध है। क्यों? क्योंकि परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपने लिए उचित, शुद्ध के रूप में चुना है, लेकिन विशेष रूप से इस्राएलियों को उन सभी अन्य राष्ट्रों से बाहर चुना है, जो परमेश्वर के लिए, परमेश्वर के स्वयं के लिए उचित नहीं हैं। लैव्यव्यवस्था में, जो मुझे एक तरह की अनिवार्य आज्ञा लगती है, मुझे लगता है कि इसे कम से कम तीन बार कहा गया है, लेकिन यहाँ यह लैव्यव्यवस्था 11:44 में है। हम पाते हैं कि परमेश्वर कह रहा है, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहीवा हूँ।

तुम्हें अपने आप को पवित्र रखना चाहिए और पवित्र होना चाहिए क्योंकि मैं पवित्र हूँ। इसलिए, परमेश्वर की ओर से इस्राएल का चुनाव इस्राएल पर परमेश्वर की पवित्रता को दर्शाने और अपने दैनिक चल रहे अभ्यास में शुद्ध और अशुद्ध के बीच अंतर करने के परमेश्वर के स्वयं के कार्य को दर्शाने के लिए एक विशेष बोझ डालता है। खतना इस्राएलियों को प्राचीन दुनिया के अधिकांश गैर-इस्राएलियों से अलग करता है।

अपवाद हैं, लेकिन आखिरकार, जब कोई गैर-यहूदी खतने के बारे में सोचता है, तो गैर-यहूदी यहूदी के बारे में सोचता है, और शायद ही कभी कुछ मिस्र के पुजारियों, आदि, आदि के बारे में सोचता है। खतना एक ऐसा अनुष्ठान था जो इस्राएली पुरुष के शरीर पर इस्राएली की विशिष्टता को अंकित करता था, यह तथ्य कि इस्राएली पृथ्वी के अन्य सभी लोगों से अलग था, ईश्वर का होने के लिए, उसके साथ वाचा में होने के लिए, ईश्वर का अपना होने के लिए, मेरा मतलब है, ईश्वर के साथ वाचा में होना। अब, इस्राएल के भीतर, इस्राएली राष्ट्र के भीतर यहूदी लोगों के भीतर आंतरिक पदानुक्रम और आंतरिक व्यवस्था को मजबूत करने वाली पवित्रता की श्रेणियाँ हैं।

तो, अगर मैं इसे पवित्रता के स्तर पर इस तरह से रखूँ, तो आपके पास सामान्य इस्राएली हैं, पुरुष और महिलाएँ। और वे स्वच्छ लेकिन सामान्य हैं। लेकिन इस्राएल के भीतर, आपके पास विशेष रूप से एक जनजाति है जिसे परमेश्वर के लिए अलग रखा गया है।

सभी इस्राएलियों को अन्यजातियों से अलग करके परमेश्वर के लिए अलग रखा गया है। लेकिन इस्राएल के भीतर, लेवी के गोत्र को परमेश्वर के लिए और भी अलग रखा गया है। इस प्रकार, लेवियों को निवासस्थान और मंदिर की भौतिक संरचनाओं और सभी अनुष्ठान गतिविधियों की देखभाल करने की विशेष जिम्मेदारी मिली।

लेवी के गोत्र में, आपके पास परमेश्वर के लिए और भी अलग समूह हैं। ये लेवी के भीतर पुरोहिती आदेश, पुरोहिती कुल या लेवी के गोत्र के भीतर पारिवारिक वंश होंगे। और इन पुरोहितों के पास सामान्य लेवी की तुलना में परमेश्वर तक अधिक पहुँच थी, जिनकी परमेश्वर तक पहुँच सामान्य इस्राएली की तुलना में अधिक थी।

और सभी उच्च पुजारियों के बीच, क्षमा करें, सभी पुजारियों के बीच, स्पॉइलर अलर्ट, एक व्यक्ति, एक आदमी, उच्च पुजारी था, जो पूरे लोगों में से भगवान के लिए सबसे अलग था। और अलग होने के अपने उच्च स्तर के कारण, उसके पास भगवान तक, भगवान के पवित्र स्थानों तक, उसके किसी भी पुजारी सहयोगी से कहीं ज़्यादा पहुँच थी। इसलिए, वास्तव में शुद्धता की इन आंतरिक रेखाओं के बारे में सोचना, जिसने संयोगवश प्राचीन इज़राइल के पुरोहित शासन, और काफी हद तक, द्वितीय मंदिर यहूदा या यहूदिया को रोमन काल में, काफी हद तक, पूरी तरह से नहीं, लेकिन काफी हद तक मजबूत किया।

और इसलिए पवित्रता संहिता यहाँ आंतरिक संरचना को सुदृढ़ करती है। और हम पहले से ही स्थानों के मानचित्रों में चले गए हैं क्योंकि वे टोरा में लोगों के मानचित्रों के साथ बहुत जुड़े हुए हैं। और मंदिर एक तरह का मॉडल है, दोनों इज़राइल के भीतर पदानुक्रम का, जो इस बात पर आधारित है कि कौन किस रेखा को पार कर सकता है और फिर आगे नहीं बढ़ सकता है, साथ ही यह पूरी दुनिया के अन्य सभी लोगों की तुलना में इज़राइल की अधिक पवित्रता का प्रतिनिधित्व करता है।

इसलिए, यदि आप मंदिर के किसी भी मॉडल या छवि की कल्पना कर सकते हैं जिसे आपने कभी देखा होगा, तो आप जानते हैं कि बाहर, सबसे बाहरी क्षेत्र को गैर-यहूदियों के न्यायालय के रूप में जाना जाता है, जो वास्तव में एक गलत नाम है। मैंने इसे प्राचीन ग्रंथों में ऐसा कहते हुए नहीं देखा है, लेकिन मैंने इसे सभी लोगों के लिए खुला न्यायालय, सभी जनजातियों के लिए खुला न्यायालय के रूप में वर्णित पाया है, उदाहरण के लिए, 4 मैकाबीज़ 4:11 में। हालाँकि, इसका नतीजा यह है कि यह वह स्थान है जहाँ गैर-यहूदी आ सकते हैं और इससे आगे नहीं। बेशक, यहूदी भी वहाँ जा सकते हैं।

यह सभी जनजातियों, सभी राष्ट्रों के लिए खुले होने का एक प्रकार का बिंदु है। लेकिन गैर-यहूदी एक निश्चित सीमा तक जा सकते थे, जिसके आगे वे अपेक्षित पृथकता की कमी के कारण नहीं जा सकते थे। संभवतः तम्बू में ऐसा बिल्कुल भी नहीं था।

शायद पहले मंदिर में भी नहीं। लेकिन दूसरे मंदिर में शिलालेखों की एक श्रृंखला थी, जिनमें से कुछ पाए गए हैं। एक पूरा शिलालेख मौजूद है और अब इस्तांबुल पुरातत्व संग्रहालय में रखा गया है।

ग्रीक में लिखे पत्थरों के एक समूह ने मूल रूप से गैर-यहूदियों को चेतावनी दी थी कि वे इस बिंदु से आगे नहीं जा सकते। और अगर वे ऐसा करते हैं, तो वे अपनी मृत्यु के लिए खुद को ही दोषी ठहराएंगे। तो, यह अंतिम नो-ट्रासपैस साइन है।

हालाँकि, इसके अलावा भी कई अन्य अदालतें थीं—पहली, इस्राएली महिलाओं की अदालत। इसलिए, इस्राएली महिलाएँ परमेश्वर के लिए अन्यजातियों से ज़्यादा अलग थीं।

वे मंदिर के भीतर अगले क्षेत्र में प्रवेश कर सकते थे और सभी गैर-इस्राएली राष्ट्रों की तुलना में, शारीरिक रूप से कहें तो, परमेश्वर तक अधिक निकट पहुँच सकते थे। इसके अलावा, वहाँ इस्राएली पुरुषों, इस्राएली आम लोगों और पुरुष आम लोगों का एक न्यायालय भी था। तो, एक और आंतरिक भेद।

अब, इस्राएली पुरुषों के आँगन में, हम वास्तविक पवित्र स्थान पाते हैं। सबसे पहले, पवित्र स्थान के सामने एक वेदी। और फिर, पवित्र स्थान, जो दो, अनिवार्य रूप से दो कक्षों से बना है।

इनमें से पहला स्थान पवित्र स्थान कहलाता है। दूसरा स्थान, पवित्र स्थान के पीछे, सबसे पवित्र स्थान है - जिसे आम तौर पर परम पवित्र स्थान के नाम से जाना जाता है।

और पवित्र स्थान एक ऐसा स्थान है जहाँ पुजारी जा सकते हैं। वे निश्चित रूप से पुजारियों के प्रांगण में, वेदी पर काम कर सकते थे, और जब उनकी बारी आती थी, तो पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकते थे, उदाहरण के लिए, भगवान के सामने धूप जलाने के लिए। लेकिन सबसे पवित्र स्थान, परम पवित्र स्थान, जिसे एक तरह से ऐसे स्थान के रूप में परिकल्पित किया गया था जहाँ दिव्य और मानवीय क्षेत्र एक दूसरे से मिलते थे।

केवल उच्च पुजारी ही जा सकते थे। और वह भी साल में केवल एक बार। और वह भी केवल बहुत सावधानी से शुद्धिकरण अनुष्ठानों और प्रदूषण से बचने के द्वारा ही संभव था।

अतिक्रमण एक ऐसी अवधारणा है जिसका सामना हम लैव्यव्यवस्था में नहीं, बल्कि संख्याओं में कर सकते हैं। लेकिन अगर कोई उस बिंदु से आगे निकल जाता है, जिसके अनुसार, बेहतर शब्द के अभाव में, वे अपने अलगाव के स्तर के आधार पर जाने के हकदार हैं, तो उस व्यक्ति को मंदिर के रक्षकों द्वारा मार दिया जाना चाहिए क्योंकि सफल अतिक्रमण उन पवित्र स्थानों को अपवित्र करता है।

और, इसलिए, यह ईश्वर का एक खतरनाक उकसावा है। अब, दूसरे और तीसरे मैकाबीज़ में इससे संबंधित कुछ अद्भुत कहानियाँ हैं। यह अपोकलिफा के लिए मेरा छोटा सा इन्फोमर्शियल है।

लेकिन गैर-यहूदी नेताओं की कहानियाँ जो अपने अधिकार से परे जाने की कोशिश करते हैं। और इन कहानियों में, एक बार जब वे सभी लोगों के लिए खुला दरबार छोड़ देते हैं, और अन्य लोगों के लिए बने पवित्र स्थानों में चले जाते हैं, तो भगवान कुछ अद्भुत, चमत्कारी तरीके से हस्तक्षेप करते हैं, भगवान के लोगों की प्रार्थनाओं के जवाब में, जो प्रार्थना कर रहे हैं कि भगवान

पवित्र स्थान को अपवित्र न होने दें। और उदाहरण के लिए, द्वितीय मैकाबीज़ में, यह सेल्यूसिड राजा, सेल्यूकस IV, हेलिओडोरस नामक एक गरीब सेनापति द्वारा नियुक्त किया गया था।

वह बस वही कर रहा है जो उसे बताया गया है। और वह अंदर जाता है, और ऐसा लगता है जैसे उसे वहीं पर दौरा पड़ गया हो। और जैसा कि 2nd Maccabees में कहानी सुनाई गई है, घोड़े पर सवार स्वर्गदूत उसे पीटते हैं और इधर- उधर फेंकते हैं।

और यह केवल उच्च पुजारी ओनियास के हस्तक्षेप के कारण ही संभव हुआ कि वह अपनी जान बचाकर भाग निकला। हम चाहे उस कहानी को ऐतिहासिक दृष्टि से कुछ भी समझें, लेकिन यह हमें मंदिर की पवित्रता और प्रदूषण के बारे में बहुत महत्वपूर्ण बातें बताती है। अतिक्रमण जानलेवा है।

इस जगह की पवित्रता, संभावित रूप से एक आशीर्वाद है, लेकिन घातक है। यदि आप पवित्र की उपस्थिति में गलत कदम उठाते हैं, तो यह घातक हो सकता है। अब, इस्राएल की भूमि को गैर-यहूदी देशों की भूमि से भी अधिक पवित्र माना जाता था।

फिर से, परमेश्वर की पसंद के कारण। परमेश्वर ने इस्राएल को अपना निवास स्थान चुना, साथ ही वह स्थान भी जिसे वह अपने लोगों को देगा। यह कनानियों की गंदगी और अशुद्धता थी जिसे उनके निष्कासन और काफी हद तक उनके विनाश का कारण बताया गया।

और यह एक ऐसा खतरा है जो इस साहित्य में इस्राएल पर मंडराता रहता है। यदि वे अशुद्धता को बढ़ाते हैं, यदि वे देश में प्रदूषण को रोकने और प्रदूषण को खत्म करने के प्रति सचेत नहीं हैं, तो भूमि उन्हें बाहर निकाल देगी, जैसा कि उसने उनसे पहले कनानियों के साथ किया था। अब, प्राचीन इस्राएल में समय के नक्शे भी हैं।

और शायद समय का सबसे स्पष्ट नक्शा सप्ताह की लय है। श्रम करने के लिए छह दिन हैं, लेकिन सातवें दिन को अलग रखा गया है, जैसे कि याजकों को इस्राएल के आम लोगों से ज़्यादा, बाकी राष्ट्रों से ज़्यादा अलग रखा गया है। सातवें दिन को भगवान ने अलग रखा है, और इसलिए यह भगवान के लिए पवित्र है।

और उस पवित्रता का सम्मान परमेश्वर के पवित्र लोगों द्वारा किया जाना चाहिए, और उन लोगों द्वारा जिन्हें पवित्र होने के लिए बुलाया गया है जैसे मैं पवित्र हूँ। इसलिए, सब्त, सातवें दिन का विश्राम, यहूदी पहचान का एक अनिवार्य चिह्न बन जाता है, साथ ही, सैद्धांतिक रूप से, एक अपरिवर्तनीय अभ्यास भी। सब्त के उल्लंघन के लिए इज़राइल में मृत्युदंड की सज़ा मौजूद थी।

इसलिए, हमारे पास हर हफ़्ते ये लय होती है जो इस्राएल के लोगों की पवित्रता की याद दिलाती है जिन्हें पवित्र परमेश्वर ने सब्त के दिन आराम करके, परमेश्वर द्वारा किए गए काम करके अपनी पवित्रता को दर्शाने के लिए चुना है। और, ज़ाहिर है, पूरे साल में सामान्य समय और पवित्र समय का एक व्यापक पवित्र कैलेंडर है। उदाहरण के लिए, फसह, पेंटेकोस्ट, या, ओह बाँय, यह एक शर्मनाक क्षण है, और बूथ के तीन तीर्थ त्योहार।

कैमरे के पीछे वाले सज्जन को धन्यवाद। धन्यवाद, डॉ. हिल्डेब्रांड। तो ये तीन समय पवित्र समय हैं।

उन्हें साल के बाकी दिनों की तरह नहीं माना जाना चाहिए। उन्हें एक खास तरीके से माना जाना चाहिए, जो उस समय की पवित्रता और उस समय के दौरान याद की जाने वाली चीज़ों की पवित्रता को दर्शाता हो। इसलिए, हमारे पास वे नक्शे भी हैं।

और जैसा कि मैंने बताया, भोजन के नक्शे या भोजन के इर्द-गिर्द नक्शे भी हैं। ये शायद शुद्धता और प्रदूषण, लेविटस के स्वच्छ और अशुद्ध नियमों, यहाँ तक कि यहूदियों और प्राचीन दुनिया में सबसे ज़्यादा सोचे जाने वाले नक्शे हैं। अगर कोई गैर-यहूदी यहूदी के बारे में तीन बातें जानता था, तो उसे पता था कि उनका खतना हुआ है, वे सब्त का पालन करते हैं, और वे इस बारे में बहुत मज़ेदार थे कि वे क्या खाएँगे और क्या नहीं खाएँगे।

लेकिन लैव्यव्यवस्था में बताया गया है कि कौन से जानवर स्वच्छ हैं और कौन से जानवर अशुद्ध हैं। स्वच्छ जानवरों में ज़मीन पर रहने वाले जानवर शामिल हैं, जिनकी दो विशेषताएँ होती हैं। वे जुगाली करते हैं, जुगाली करते हैं और उनके खुर फटे हुए होते हैं।

अगर किसी जानवर में एक है और दूसरा नहीं है, तो वह साफ नहीं है। अगर किसी जानवर में दोनों में से कोई भी नहीं है, तो वह साफ नहीं है। समुद्री जीव साफ हो सकते हैं।

वे जो स्वच्छ हैं वे वे हैं जिनके पंख और शल्क दोनों हैं। यदि उनमें से एक या दूसरा या दोनों की कमी है, तो वे अशुद्ध हैं क्योंकि यह श्रेणियों का मिश्रण है। यह ईश्वर के आदेश में विचलन है।

उदाहरण के लिए, मैंने झींगा मछली का ज़िक्र किया था, जो पानी में रहती है लेकिन ज़मीन पर चलती है। यह भगवान की श्रेणियों को पार करना है। गैर-यहूदियों के लिए झींगा मछली खाना ठीक हो सकता है क्योंकि गैर-यहूदी अशुद्ध हैं, और झींगा मछली भी अशुद्ध है।

वे एक साथ बहुत ही खूबसूरती से चलते हैं। लेकिन जो लोग प्रभु के लिए पवित्र होने के लिए अलग रखे गए हैं, उन्हें शुद्ध और अशुद्ध के बीच का अंतर करना चाहिए, जिसे परमेश्वर ने स्वयं इस व्यक्ति को चुनने में बनाया है, न कि उस व्यक्ति को, न कि उन लोगों को। इसके अलावा, इस बारे में सावधानीपूर्वक नियम हैं कि किस उपभोक्ता के लिए भोजन का कौन सा हिस्सा उचित है।

रक्त ईश्वर का है। लैव्यव्यवस्था में एक प्रसिद्ध श्लोक है कि रक्त जीवन है, और रक्त एक विशेष उद्देश्य के लिए दिया जाता है, इसे पीने के लिए नहीं बल्कि पवित्र लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित्त करने के लिए दिया जाता है। रक्त ईश्वर का है।

इसलिए, यहूदी खून नहीं खाते। वे इसे खाने से पहले ऊतक से खून को सावधानीपूर्वक निकाल देते हैं। हालाँकि, उदाहरण के लिए, बलि के जानवर को ही लें।

उनमें से ज़्यादातर जानवरों को किसी ने खा लिया। हमेशा नहीं। कुछ पूरी होमबलि भी थीं।

लेकिन अगर मैं मंदिर में धन्यवाद भेंट लेकर जाता, तो मुझे वास्तव में इसका एक अच्छा हिस्सा खाने को मिलता। लेकिन पुजारियों को इसका कुछ हिस्सा खाने को मिलता और भगवान को प्रतीकात्मक रूप से इसका कुछ हिस्सा खाने या प्राप्त करने को मिलता। जो हिस्सा पूरी तरह से जला दिया गया था, उसका आनंद भगवान को लेना था।

कुछ हिस्से, और मुझे याद नहीं कि कौन से, पुजारियों के खाने के लिए थे। और आम चढ़ावा चढ़ाने वाला पुजारी का हिस्सा नहीं खाता था क्योंकि वह पुजारियों के लिए पवित्र था। यह उसका अपना हिस्सा था।

आम आदमी और उसका परिवार बाकी बचे हुए को खा सकता है। और इसलिए, एक तरफ, हमारे पास भोजन पर ध्यान है, लेकिन भोजन पर ध्यान इसराइल के आंतरिक पदानुक्रम को मजबूत करता है जिसमें ईश्वर सबसे ऊपर है, उसके बाद पुजारी हैं, और बाकी सभी नीचे हैं। जैसा कि मैंने कहा, ध्यान, इनमें से बहुत से नियम परस्पर मजबूत हैं।

भोजन पर ध्यान देने से इस्राएली और गैर-इस्राएली के बीच का अंतर काफी हद तक मजबूत होता है। और यहाँ तक कि यहूदी भी इसे आहार नियमों के एक प्राथमिक कार्य के रूप में पहचानने लगे। ये हमें दूसरे देशों के लोगों के साथ बहुत ज़्यादा घुलने-मिलने से रोकने के लिए दिए गए हैं, जो धर्म और ईश्वर और नैतिकता के बारे में उनके पागल विचारों से ग्रसित हैं।

इसलिए, यह तथ्य कि यहूदियों को स्वच्छ भोजन खाने, स्वच्छ तरीकों से तैयार किए जाने, खून न होने, गला घोंटे न जाने और इस तरह की अन्य चीजों का विशेष ध्यान रखना पड़ता था, इसका मतलब था कि वे प्रवासी क्षेत्रों में अपने खुद के बाजार बनाने जा रहे थे, उदाहरण के लिए। इसलिए, उन्हें आश्चर्य कि जा सकता था कि उन्हें स्वच्छ भोजन मिल रहा है, साफ-सुथरे तरीके से तैयार किया गया है। और इसका मतलब यह है कि यहूदी प्रवासी शहरों में खुद को और अधिक घनिष्ठ समुदायों में संगठित करेंगे क्योंकि वे अपने बाजारों के इर्द-गिर्द संगठित होंगे।

और इसलिए, क्या खाना चाहिए और क्या नहीं खाना चाहिए, इस बारे में आहार संबंधी नियम लोगों के मानचित्रों और इस्राएल के आह्वान को भी पुष्ट करते हैं कि वे अलग रहें, अलग रहें, पृथ्वी के बाकी सभी लोगों से अलग रहें क्योंकि यही परमेश्वर की पसंद थी। अंत में, हम शरीर के मानचित्रों को देखते हैं। यहाँ, लेविटिकस अपने सबसे दिलचस्प बिंदु पर है, जहाँ यह सतहों पर ध्यान देता है।

उदाहरण के लिए, त्वचा की सतह, कपड़ों की सतह, और छिद्र, शरीर में वे छिद्र जहाँ से गंदगी प्रवेश कर सकती है, या प्रदूषण बाहर निकल सकता है। और, आप जानते हैं, विचार यह है कि शरीर बरकरार रहना चाहिए, और जो अंदर है वह आम तौर पर अंदर ही रहना चाहिए। और बाहर से जो कुछ भी अंदर आता है, उसके बारे में सावधान रहना चाहिए।

मेरा मानना है कि यह खाद्य पदार्थों की श्रेणियों से ज़्यादा संबंधित है। लेकिन यहाँ, शरीर से तरल पदार्थ नहीं निकलने चाहिए। त्वचा पारगम्य नहीं होनी चाहिए, जैसा कि लेविटिकस और अन्य जगहों पर कुछ रोग के रूप में वर्णित विभिन्न प्रकार के एक्जिमा में होता है।

और जो शरीर जीवन से मृत्यु की ओर चले गए हैं या जो जीवन से मृत्यु की ओर जाने का प्रतीक हैं। उदाहरण के लिए, एक महिला का मासिक धर्म प्रवाह, वास्तव में, एक ऐसे जीवन का प्रतीक है जो हुआ ही नहीं, प्रदूषण का स्रोत बन जाता है। व्यक्तिगत शरीर सामाजिक शरीर के लिए एक तरह का प्रतीक बन जाता है।

व्यक्तिगत शरीर की सीमाओं की अखंडता के बारे में चिंताएँ सामाजिक शरीर की सीमाओं की अखंडता के बारे में चिंताओं को दर्शाती हैं। अब, इस संबंध में एक और शानदार विद्वान, रिचर्ड नेल्सन, और मैं अब मैरी डगलस का उल्लेख करता हूँ, ने लिखा; उन्होंने लेविटस के बारे में बहुत कुछ लिखा, लेकिन उनका हस्ताक्षर कार्य पवित्रता और खतरा है। आधुनिक आदिवासी संस्कृतियों के साथ-साथ प्राचीन इज़राइली संस्कृति के उनके व्यापक अध्ययन ने उन्हें इस अंतर्दृष्टि तक पहुँचाया कि शरीर, व्यक्तिगत भौतिक शरीर, एक मॉडल है जो किसी भी सीमित प्रणाली का प्रतिनिधित्व कर सकता है।

और इसलिए, जैसा कि हम सोचते हैं, जैसा कि हम लेविटस को इस संदर्भ में पढ़ते हैं कि इस सीमा को क्या पार करता है, त्वचा की सीमा, हमें इस बारे में भी सोचना चाहिए कि यह इजरायल की सीमाओं के बारे में इजरायल की चिंता को मजबूत करने का एक तरीका है और क्या इजरायल में प्रवेश करता है और क्या इजरायल से बाहर जाता है। अब, मुझे कहना चाहिए कि प्रदूषण अपने आप में आम तौर पर कोई समस्या नहीं थी। ऐसा नहीं था कि यहूदी हर कीमत पर प्रदूषण से बचना चाहते थे।

यह अपरिहार्य था। हर महीने, एक महिला को मासिक धर्म होता था। हर किसी को अपने रिश्तेदारों की मृत्यु का दुख सहना पड़ता था और उन्हें शव को संभालना पड़ता था और शव को दफनाना पड़ता था।

अस्वच्छता, मुझे प्रदूषण कहना चाहिए, अपरिहार्य है। किसी को यह जानने की आवश्यकता है कि क्या और कब ऐसा हुआ है ताकि प्रदूषण को दूर करने के लिए उचित शुद्धिकरण अनुष्ठान किए जा सकें, ताकि प्रदूषण को रोका जा सके और उससे निपटा जा सके, न कि भूमि के भीतर फैल जाए, गुणा हो जाए और जमा हो जाए और इस तरह भूमि को एक बार फिर से अपने निवासियों को उल्टी करने की धमकी दे। प्रदूषण पूरे पवित्र भूमि में होता है, और जो दिलचस्प है, शायद थोड़ा विचित्र है, वह यह है कि प्रदूषण का प्रभाव स्वयं पवित्रतम पर भी पड़ता है।

जैसा कि हम प्रायश्चित दिवस के अनुष्ठान को ध्यान से देखें तो पाएंगे कि यह केवल एक मामला नहीं है कि हमें वहां प्रदूषण से निपटना है, बल्कि हमें वहां प्रदूषण के प्रभावों से निपटना है, उस अंतरतम स्थान पर जहां मनुष्य ईश्वर से संपर्क करता है। और इसलिए पवित्र स्थान को साफ करने पर ध्यान दिया जाता है, वह अंतरतम पवित्र स्थान जहां कोई भी कभी नहीं जाता है, वहां पूरे साल होने वाले प्रदूषण से। यह उल्लेखनीय है कि कुछ प्रदूषणों के लिए कोई शुद्धिकरण अनुष्ठान और कोई बलिदान निर्धारित नहीं है, यह दर्शाता है कि कुछ प्रदूषणों के लिए कोई उपाय नहीं है, कम से कम प्राचीन इज़राइल में, प्रदूषित लोगों के विनाश को छोड़कर।

उदाहरण के लिए, यह उस व्यक्ति से संबंधित है जो जानबूझकर अशुद्ध भोजन खाता है, मूर्तिपूजा में भाग लेता है, या सब्बाथ का उल्लंघन करता है। मैं अब यहाँ थोड़ा और समय लेने जा रहा हूँ ताकि यह सोच सकूँ कि प्रतिभागियों के लिए पवित्रता संहिताएँ क्या अर्थपूर्ण बनाती हैं। मैंने इनमें से कुछ का पहले ही उल्लेख किया है, लेकिन मैं उन्हें एक साथ लाना चाहता हूँ।

सबसे पहली और सबसे महत्वपूर्ण बात ईश्वर की आज्ञा है, पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ। इस्राएल का चुनाव, क्षमा करें, ईश्वर द्वारा इस्राएल का चुनाव, इस्राएल को यह आदेश भी है कि वह खुद को ऐसी स्थिति में रखे जहाँ वह पवित्र ईश्वर से संबंधित हो सके, जहाँ वह पवित्र ईश्वर के साथ बातचीत कर सके। पवित्र ईश्वर का खुद को इस्राएल के साथ जोड़ना, हर जगह की तुलना में उनके बीच एक विशेष तरीके से रहने का चुनाव करना, यह मांग करता है कि लोग समग्र रूप से पवित्र हों और शुद्धता और प्रदूषण के इन मुद्दों पर ध्यान दें जो ईश्वर के साथ संपर्क को लाभकारी और विनाशकारी नहीं होने देते हैं।

यहोवा के लिए पवित्र भूमि, इस्राएल की भूमि, ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो पवित्र रहें और इसे अपवित्र न करें। फिर से, लैव्यव्यवस्था 18 यहाँ पढ़ने के लिए एक अच्छा मार्ग है। फिर से, यह कनानियों का प्रदूषण था जिसने भूमि को खुद ही उन्हें बाहर निकालने के लिए प्रेरित किया, लाक्षणिक रूप से बोलते हुए।

और इसलिए यह होना चाहिए कि जो लोग अब भूमि पर रहते हैं, उन्हें शुद्धता के स्तर का पालन करना चाहिए और प्रदूषण से प्रभावी ढंग से निपटना चाहिए ताकि भूमि उन्हें बनाए रखे। एक बहुत ही दिलचस्प पाठ, मुझे लगता है कि कम से कम, लैव्यव्यवस्था 20:22 से 26 है। यह फिर से वह जगह है जहाँ हम इस्राएल की स्वच्छ और अशुद्ध के बीच अंतर करने की चिंता को देखते हैं, जो इस्राएल को पृथ्वी के अन्य सभी लोगों से अलग और विशिष्ट होने के लिए परमेश्वर के चुनाव को दर्शाता है।

तो फिर, सभी अन्य लोगों के समूहों के संबंध में इस्राएल की सामाजिक सीमा और सामाजिक पहचान का प्रतिबिम्बन वह है जो हर उस निर्णय से प्रभावित और सुदृढ़ होता है जो कोई भी इस्राएली स्वच्छ या अशुद्ध के बारे में करता है। संयोग से, सब्त का पालन करना भी मुख्य रूप से ईश्वर की गतिविधि को प्रतिबिम्बित करने के रूप में माना जाता है, चाहे वह दुनिया को बनाने में ईश्वर के कार्य का साक्षी हो, किसी अन्य ईश्वर द्वारा दुनिया को बनाने के विपरीत, या ईश्वर के छुटकारे के कार्य का साक्षी हो, जो इस्राएल को मिस्र से, दासता के घर से बाहर लाकर एक लोगों के रूप में बनाता है। दूसरे मंदिर काल के दौरान, विशेष रूप से डायस्पोरा में, हम पाते हैं कि यहूदी अन्य ग्रंथों के अलावा लैव्यव्यवस्था के नियमों को समझाने और सार्थक बनाने के लिए अन्य तरीकों की तलाश कर रहे थे।

उदाहरण के लिए, विशेष रूप से एलेक्जेंड्रिया या एंटीओचियन यहूदी धर्म में, आहार नियमों के बारे में नैतिक सिद्धांतों को एन्कोड करने के बारे में सोचना तेजी से आम हो गया है। इसलिए, उदाहरण के लिए, एरिस्टियास के पत्र में, शायद पहली शताब्दी ईसा पूर्व का एक पाठ जो संभवतः मिस्र में लिखा गया था, शायद तब भी एलेक्जेंड्रिया, मिस्र में, हम पाते हैं कि जानवरों में कुछ खास विशेषताएं होती हैं या कुछ खास विशेषताएं बताई जाती हैं। और इसलिए, इस जानवर

को खाने से बचना वास्तव में उस जानवर की विशेषताओं को अपनाने के खिलाफ एक नैतिक निर्देश है।

इसलिए, इस्राएली और यहूदी गिद्ध या गिद्ध नहीं खाते क्योंकि हमें सिखाया जाता है कि कमज़ोर या मरते हुए लोगों का शिकार नहीं करना चाहिए। और इसलिए, वास्तव में, उस पाठ में आपको विभिन्न जानवरों और उनसे जुड़ी बुराइयों के बारे में एक लंबा विवेचन मिलता है। इसलिए, यह नए युग में उनके अपने शुद्धता कानूनों और उनके अपने आहार नियमों की सार्थकता के बारे में सोचने का एक तरीका बन जाता है।

इस संबंध में एक और पाठ 4 मैकाबीज़ है, जहाँ आहार नियमों को नैतिक या रूपक नहीं बनाया गया है, बल्कि उन्हें आत्म-नियंत्रण के गुण को विकसित करने के लिए ईश्वर द्वारा दिए गए प्रशिक्षण अभ्यास कार्यक्रम के रूप में देखा जाता है। इसलिए, हम सूअर और झींगा जैसे सबसे रसीले और स्वादिष्ट मांस से परहेज करते हैं, और यह ईश्वर का तरीका है कि हम अपने जुनून पर लगाम लगाएँ, अपनी इच्छाओं पर लगाम लगाएँ, और हमें प्रतिदिन आत्म-नियंत्रण का अभ्यास कराएँ ताकि हम आत्म-नियंत्रण से लैस होकर बड़े नैतिक निर्णय भी ले सकें। अंत में, मैं पवित्रता के साथ चिंता के स्तरों के बारे में कुछ शब्द कहना चाहता हूँ।

आप पवित्र परमेश्वर के निवास के केंद्र के जितना करीब होंगे, आपको पवित्रता और प्रदूषण के बारे में उतना ही अधिक चिंतित होना पड़ेगा। मंदिर के कर्मचारियों, पुजारियों और लेवियों को, न केवल यरूशलेम में निवास करते समय बल्कि आम तौर पर पूरे वर्ष, कई प्रदूषणों के खिलाफ सावधानी बरतनी पड़ती थी, जो आम लोगों के लिए मंदिर से दूर रहने के दौरान काफी हद तक ठीक होती। इस प्रकार, पुजारी केवल अपने सबसे करीबी रिश्तेदारों के दफ़न में शामिल हो सकते थे, लेकिन अन्य लोगों के लिए शव प्रदूषण करने से मना किया गया था, जबकि आम इस्राएली किसी को भी दफना सकते थे और उनकी देखभाल कर सकते थे।

वास्तव में, यह टोबिट के लिए दान का एक प्रशंसनीय कार्य है, एक अन्य अंतर-नियम पाठ, टोबिट द्वारा उजागर इस्राएलियों को दफनाना। लेकिन एक पुजारी ऐसा नहीं कर सकता था। एक पुजारी को अपने सबसे करीबी पारिवारिक रिश्तेदारों को दफनाने तक ही सीमित रखा जाएगा।

मंदिर के पवित्र परिसर में प्रवेश करने वाले सभी लोग शुद्धता और प्रदूषण, शुद्धता के स्तर के प्रति अधिक चौकस होंगे, जितना कि वे मोदीन या गमला में अपने घर पर रहते हैं। सभी यहूदियों को पूरे देश में होने वाले प्रदूषण को रोकने और दूर करने के बारे में चिंतित होना चाहिए, ताकि भूमि उन्हें बाहर न निकाल दे। लेकिन निश्चित रूप से, फिर से, इसका मतलब यह नहीं है कि वे हर कीमत पर प्रदूषण से बचते थे।

उन्होंने बस तब इसका निपटारा किया जब यह हुआ। कई निषिद्ध प्रदूषण हैं जिनसे सभी यहूदियों को हर कीमत पर बचना था। उदाहरण के लिए, अनुमत प्रदूषण के लिए शुद्धिकरण में जानबूझकर देरी करना एक जानबूझकर किया गया अपराध था, और इसने पवित्र स्थानों को प्रदूषित कर दिया।

जैसा कि मैंने अभी बताया, पुजारियों के लिए शव प्रदूषण, पुजारियों के सबसे करीबी रिश्तेदारों को छोड़कर। कुछ यौन प्रदूषण, अनाचार, मासिक धर्म के दौरान महिला के साथ संभोग, पशुता और समलैंगिक प्रथाएँ। मूर्तियों के साथ जुड़ना या मूर्ति पूजा करना एक प्रदूषण था जिसके लिए कोई शुद्धिकरण नहीं था।

इसके अलावा, हत्या, खतने की उपेक्षा, और मंदिर या सब्त को अपवित्र करना। कम से कम दूसरे मंदिर यहूदी धर्म के भीतर एक उल्लेखनीय चर द्वितीयक प्रदूषण के बारे में चिंता थी, जो किसी व्यक्ति या चीज़ द्वारा छुए जाने के कारण होता है जो स्वयं अशुद्ध थी। अधिकांश यहूदी द्वितीयक प्रदूषण के बारे में चिंतित नहीं थे।

लेकिन ऐसा लगता है कि फरीसी द्वितीयक प्रदूषण के बारे में चिंतित होकर खुद को अलग पहचान देते थे। इसलिए, वे न केवल उस अशुद्ध व्यक्ति द्वारा किए गए प्रदूषण का ध्यान रखते थे जिसने उन्हें छुआ था, बल्कि उस चीज़ का भी ध्यान रखते थे जिसे उस अशुद्ध व्यक्ति ने छुआ होगा जिसे वे छू सकते थे। और इसलिए, उन्होंने अन्य यहूदियों के साथ अपने मेलजोल को उसी के अनुसार नियंत्रित किया।

यही कारण है कि फरीसी इतने स्पष्ट रूप से विभेदित समूह थे और इसीलिए वे अन्य फरीसी लोगों के साथ खाते थे, न कि किसी अन्य आम इस्राएली के साथ। यहूदी धर्म के अनुयायी स्वच्छ हाथों और शुद्ध हृदय के संबंध में पवित्रता बनाए रखने में रुचि रखते थे। मैं अंत में इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि प्राचीन इस्राएली, दूसरे मंदिर के यहूदी, पवित्रता के बारे में चिंतित थे, दोनों ही मामलों में जिसे हम नैतिकता और इरादे कहेंगे और जिसे हम अनुष्ठानिक पवित्रता कहेंगे।

नियम और प्रथाएँ केवल बाहरी बातें नहीं थीं। वे मूल विश्वासों के बाहरी प्रतिबिंब थे। अर्थात्, परमेश्वर की इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता कि यहूदियों को परमेश्वर के लिए पवित्र होना चाहिए, जैसे कि परमेश्वर पवित्र था, और अशुद्ध दुनिया के बीच परमेश्वर की पवित्रता का प्रतिबिंब जीने की प्रतिबद्धता।

यह डॉ. डेविड डिसिल्वा द्वारा नए नियम की सांस्कृतिक दुनिया पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 7 है, पवित्रता और प्रदूषण।